National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2016; 1(5): 19-21
© 2016 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. सरोज गुप्ता
एसोशिएट प्रोफेसर,
सत्यवती महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली

Correspondence:
विजय कुमार
पीएच॰ डी॰, शोध छात्र,
हिन्दी विभाग, जम्मूविश्वविद्यालय,
जम्मू।

संस्कृत - ज्ञान का स्रोत

डॉ. सरोज गुप्ता

समाज की स्थिरता के लिए, आचार व्यवहार के लिए, नैतिकता के लिए, धर्म की स्थापना के लिए समाज के निर्माण में संस्कृत भाषा का अद्वितीय योगदान है। सर्वप्रथम मनु ने मनुस्मृति में धर्म का स्वरूप बताया, उसकी समाज में स्थापना को अनिवार्य माना है। मनुष्य के जीवन को चार भागों - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वाणप्रस्थ, सन्यास - में बाँट कर समय के अनुसार ही कर्त्तव्य कर्म करने का आदेश दिया। समाज को चार वर्णों - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र - में बाँटकर उनके कर्त्तव्य निश्चित किए। मनु के द्वारा निर्दिष्ट धर्म और राजा के कर्त्तव्यों के अनुसार ही आज भी हमारा राष्ट्र स्थापित है।

अर्थशास्त्र या इकोनोमिक्स का मूल भी संस्कृत भाषा का महान् ग्रंथ कौटिल्य का अर्थशास्त्र है। सांख्यिकी पढ़ने वाले जानते हैं कि अर्थशास्त्र के प्रायः नियम कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर ही आधरित हैं जो आज के समय में भी कितने प्रासंगिक हैं। राजनीतिशास्त्र तो पूर्ण रूप से आचार्य चाणक्य का ऋणी रहेगा। वह चाणक्य शिक्षा आज तक राजनीति विज्ञान का मुख्य विषय है।

योग का प्रचलन जितना हमारे देश में है उससे भी अधिक अब विश्व में हो गया है, जो कि संस्कृत की ही देन है। प्राणायाम, ध्यान, योगासन आज मनुष्य के जीवन में अनिवार्य अंग बन चुके हैं। प्राणायाम के द्वारा श्वास पर संतुलन बनाकर मनुष्य उच्च रक्तचाप, दमा आदि व्याधियों से मुक्त होता है। शवासन, धनुरासन, सर्पासन, शीर्षासन जेसे योगासनों से मनुष्य शरीर के साथ-साथ बुद्धि का भी विकास होता है, यह सर्वविदित है। छात्रा को पतञ्जलि का योगसूत्र पढ़ाकर हम उसे योग की पूरी जानकारी न देकर केवल शरीर स्वस्थ करते हैं। अपितु इस विषय को व्यवसायिक बनाकर उसकी आजीविका का साधन भी तो देते हैं। तभी तो कहा गया है-। "*Healthy Mind Lives in Healthy Body*" प्रो. अरुणा ब्रूटा का मत मनोवैज्ञानिक व्याधियों को दूर करने का प्रथम साध्न योग और प्राणायाम को ही बताया। क्या यह योग संस्कृत भाषा को विश्व को अद्वितीय योगदान नहीं है?

वास्तुशास्त्र न केवल भारत को अपितु विश्व को संस्कृत की ही देन है। भवन निर्माण में जहाँ प्रफान्स की तकनीक आर्किटेक्ट में पढ़ाई जाती है, वहीं आज विश्व के प्रसिद्ध आर्किटेक्ट

शिल्पशास्त्र को पढ़ते हुए भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार भवन निर्माण कर रहे हैं। वास्तु का सर्वप्रथम वर्णन ऋग्वेद में प्राप्त होता है। वास्तु एक देवता है जो घर की रक्षा करता है।
वास्तुपति का उपशमन करना चाहिए। यदि घर ठीक करवाना हो, नया बनवाना हो तो वास्तु के नियमों का पालन करने से वास्तुपति प्रसन्न होते हैं-

जीर्णोद्वारे तथोद्याने तथा गृहनिवेशने
द्वाराभिवर्धते तद्वत् प्रसादेषु गृहेषु च।
वास्तूपशमनं कुर्यात् ....।।

पञ्चमहाभूत - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश - जिनसे हमारा शरीर निर्मित है, इनका हमारे आसपास भी उतना ही महत्त्व है। जब हमारे घर में या कार्यालय में ये वास्तु के अनुसार यथास्थान होते हैं तो ये वैभव, समृद्धि, शान्ति प्रदान करते हैं। इनका अपने उचित स्थान पर न होना, अशान्ति, मृत्यु, निर्धनता और भय का आगमन होता है। यही वास्तु का विषय है। बड़े-बड़े उद्योगपति और फिल्मी सितारे आज वास्तु के अनुसार अपने जीवन में परिवर्तन कर सपफलता पा रहे हैं।

वास्तु की प्रामाणता के उदाहरण हमारे पास हैं-

त्रावणकोर का राजभवन, इटली का पिरामिड, अकबर और औरंगजेब के महल, लाल किला, मक्का और मदीना, तिरूपति मंदिर आदि प्राचीन वस्तु के स्पष्ट प्रमाण हैं। जीवन के इतने आवश्यक विषय को उच्चशिक्षा में लोकर हम छात्र को आगे चलकर आजीविका का साधन भी दे सकते हैं जो कि संस्कृत पठन से ही संभव है।

स्वयं को आधुनिक कहे जाने वाले लोग भी अपने घर के प्रत्येक संकार को पण्डित बुलाकर उनसे उचित समय निकलवा कर ही करना उचित समझते हैं तथा जब भी हम कभी परेशानियों में घिर जाते हैं तो अपनी जन्मकुण्डली लेकर पण्डितों के पास भागते हैं। इसी से **ज्योतिष** के महत्त्व को जाना जा सकता है कि ज्योतिष क्या है?

नवग्रह और बारह राशियाँ हमारे जीवन को इतना अधिक प्रभावित करती हैं कि इसके परिणाम हर व्यक्ति देख रहा है। इसलिए ज्योतिष में विश्वास दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। छात्र को ज्योतिष का विधिवत् ज्ञान देना इतना आवश्यक है कि वह आगे चलकर पोंगा पण्डितों से स्वयं की रक्षा करने के साथ-साथ ज्योतिष से ग्रहों की दशा जानकर बुरे नक्षत्रों के प्रभाव को निरस्त कर अपने जीवन में सुख शान्ति प्राप्त कर सकता है। ग्रहमण्डल का जैसा विस्तृत वर्णन वराहमिहिर ने किया, वह विश्व में कहीं भी मिलना कठिन है। आज हर व्यक्ति अपने ग्रहों के अनुसार ही अपना कैरियर बनाने की तैयारी कर रहा है।
संस्कृत साहित्य में भरतमुनि ने नाट्य शास्त्र में जिन नियमों को निर्धरित किया वे ही नियम आज भी प्रत्येक भारतीय नाटक में विद्यमान हैं। अंग्रेजी के शेक्सपीयर के नाटकों पर कालिदास के नाटकों की छाप स्पष्ट है। भारतीय फिल्मों का प्रादुर्भाव संस्कृत नाटकों से ही है। नायक, नायिका, विदूषक अथवा हास्यकलाकार, खलनायक की कल्पना हमारे धर्मशास्त्र, रामायण, महाभारत और कालिदास आदि के नाटकों से ही उत्पन्न है।

आज का युग विज्ञान का युग है। **विज्ञान** के बिना जीना असंभव ही है। संस्कृत भाषा की व्यापकता विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीनकाल से ही विद्यमान है। वैज्ञानिकों ने इसे अपने शोध का आधर बनाया है। आयुर्वेद में चरक एवं सुश्रुत जैसे चिकित्सक हुए, जिन्होंने स्वास्थ्य को ही जीवन का सबसे बड़ा सुख कहा है - ***'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'।***
आयुर्वेद का प्रभाव और प्रसार आज इतना बढ़ चुका है कि मनुष्य शरीर की बड़ी व्याधियों - खराब लीवर, उच्च अथवा नीचा रक्तचाप, हृदय रोग, त्वचासंबंधी रोग के लिए आयुर्वेदिक दवाइयों पर ही विश्वास करने लगे हैं, क्योंकि ये दवाइयाँ शरीर पर कोई गलत प्रभाव नहीं डालती हैं, जैसा कि अंगे्रजी दवाइयों को लगातार प्रयोग से होता है। आयुर्वेद को उच्च शिक्षा में

सम्मिलित करके छात्र को इसे व्यवसाय बनाने में भी सहायता मिल सकती है। इसलिए आयुर्वेद को उच्च शिक्षा में सम्मिलित किया जाना आवश्यक है। पतञ्जलि योगपीठ जैसी संस्था नई-नई जड़ी-बूटियाँ ढूँढकर असाध्य बीमारियों का निदान दे रही है जहाँ आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त व्यक्ति आजीविका कमा रहे हैं।

आज **मैनेजमेंट** का प्रचार शिक्षा में बढ़ रहा है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र और महाभारत के आदिपर्व में इस विषय में विस्तृत वर्णन प्राप्त है। श्रीमद् भगवद्गीता की मैनेजमेंट में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। गीतामें वर्णन है कि कर्म में कुशलता ही योग है - ***'योगः कर्मसु कौशलम्'।***

अपने कर्त्तव्य कर्म को निर्लिप्त होकर करते हुए मनुष्य को फल ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार वह पफल से प्राप्त होने वाले पाप और पुण्य से परे हो जाता है और उन पाप-पुण्यों को भोगने के लिए बार-बार जन्म नहीं लेता। अतः निष्काम भावना से कर्म करता हुआ मनुष्य स्वयं मोक्ष की ओर अग्रसर होता है। अपने जीवन को दायित्वों अथवा कत्र्तव्य कर्मों को छोड़कर जंगल में समाधि लगा लेने से मोक्ष कदापि नहीं मिलता, जीवन का कर्त्तव्य परायणता का ऐसा उपदेश विश्व में दुर्लभ है। इस निष्काम कर्म को विषय में कृष्ण कहते हैं-

'योगस्थः कुरु कर्माणि संघह् त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्धयसिद्धयो समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।'

अन्त में मैं यही कहना चाहती हूँ कि संस्कृत भाषा रूढ़िवादी और व्यर्थ नहीं है। धर्म ज्ञान के लिए, धर्म की समाज में स्थापना के लिए, जीवन में सुख-शान्ति और समृद्धि लाने के लिए संस्कृत का ज्ञान अनिवार्य है। पाश्चात्य देश जब संस्कृत की देन अध्यात्म, प्राणायाम, वास्तु, ज्योतिष, चिकित्सा का आश्रय ले रहे हैं तो इन विषयों को उच्च शिक्षा का अंग बनाकर हम छात्र को पूर्ण विकसित क्यों न करें।